सादर प्रकाशनार्थ

आचार्य श्री तुलसी जन्म–शताब्दी समारोह तक दिल्ली के विद्यालयो में जीवन विज्ञान प्रशिक्षण का सशक्तीकरण किया जाय।

– प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार

नई दिल्ली 10 दिसम्बर 2010

दिल्ली की मुख्यमंत्री **श्रीमती शीला दीक्षित** के साथ आज यहां उनके निवासस्थान पर आचार्य श्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्त्ती विद्वान प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार की एक भेंटवार्ता हुई जिसमें मुनिजी ने मुख्यमंत्री को आगामी 2014 में मनाए जाने वाले आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के विषय में बताया तथा यह भी बताया कि 2014 में आचार्य श्री महाश्रमणजी का चातुर्मास दिल्ली में होने की संभावना है।

मुनिजी ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने स्वर्गवास से चार मास पूर्व एक कल्पना प्रस्तुत की थी कि आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर विज्ड़म वर्ल्ड (प्रज्ञा–विश्व) के निर्माणार्थ एक ऐसे प्रशिक्षण संस्थान को विकसित किया जाएगा जिसमें समाज के सभी वर्गों को अहिंसा आदि मूल्यों के प्रशिक्षण की व्यवस्था रहेगी। चेतना के रूपान्तरण की प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक आधारों पर इसमें व्यक्ति–व्यक्ति के भीतर विद्यमान मानसिक एवं भावात्मक दुर्बलताओं को तिरोहित कर उसे चरित्रवान् तथा आवेश–मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई जाएगी। यही उपाय है–प्रज्ञा के जागरण का। जब व्यक्ति की प्रज्ञा (विज्ड़म) जागृत हो जाती है, तो वह ज्ञान को क्रिया यानी आचरण में बदल सकता है।

मुनिजी ने मुख्यमंत्री को यह भी बताया कि जीवन विज्ञान का बहुत अच्छा कार्य दिल्ली के विद्यालयों में पिछले 15 वर्षों में हुआ है। 2014 तक यह कार्य सभी विद्यालयों में सशक्त रूप से चले, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। उन्होंने जीवन विज्ञान एवं योग के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की जानकारी दी जो जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थशिक्षा के रूप में पूरे देश में चल रहा है तथा जिसमें अध्यापकों सहित लगभग 5–6 हजार व्यक्ति प्रतिवर्ष प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। मुनिजी ने आशा व्यक्त की दिल्ली के विद्यालयों के हजारों अध्यापक आगामी तीन वर्षों में इससे लाभान्वित किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित मुनिजनों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मैं स्वयं प्रेक्षाध्यान–जीवन विज्ञान के प्रयोग कर रही हूं तथा इससे मुझे लाभ मिल रहा है। अध्यापकों का अच्छा प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है। हम पूरा प्रयत्न करेंगे कि इसकी क्रियान्विति हो सके।

जब मुनिश्री ने आचार्य श्री महाश्रमणजी की राजस्थान में तीन वर्षों तक चलने वाली पदयात्राओं के सम्बन्धं को अवगत कराया तो उन्होंने कहा कि यद्यपि मैं अपना अधिकाधिक समय अपने राज्य के कार्यों में ही लगाती हूं, फिर भी अवसर आने पर मैं आचार्यश्री के दर्शन करने का अवश्य प्रयत्न करूंगी।

श्रीमती दीक्षित ने यह भी बताया कि यदि दिल्ली में आचार्यश्री का चातुर्मास होगा, तो उसकी व्यवस्था में मैं पूरा सहयोग करूंगी। जो कार्य आप लोग कर रहे हैं, वह पूरे देश के लिए बहुत ही मूल्यवान है।

मुनि अजित कुमार, मुनि अमृत कुमार तथा मुनि अभिजित कुमार भी वार्ता में संभागी बने। अणुव्रत भवन के डायरेक्टर श्री रमेश कांडपाल भी संभागी बने।